5ESV15

पाठ 5

सरद रितु आ गे

-पं. द्वारिका प्रसाद तिवारी 'विप्र'

धरती माता ल सुघ्घर बनाए बर रितु समय–समय म बदलत रहिथे, अऊ कभू पानी त कभू ठंड करत रहिथे, जेमा चउमास ह हमर जिनगी के आधार आय। हरियर–हरियर धरती ल देखके सब जीव के मन गदगद हो जाथे अउ सबके जीवन में खुशी भर जाथे। चउमास के पाछु सरद रितु ह अपन संग अनपुरना ल लेके आथे, चउमास के झंझट ह कम होय बर लागथे।

सरद रितु म हमर खेत–खार अउ गाँव ह सुंदर लागथे। चारोकोती तरिया नरवा म कमल फूल ह छतरा गे हवय। चिरई–चुरगुन मन खुशी म चारोखुँट चुहुल–पुहुल करे लागथे। कवि ह ये कविता में सरद रितु के सुघरई के वर्णन करे हवय।

चउमास के पानी परागे।
जाना–माना अब अकास हर,
चाँउर सही छरागे।

जगजग ले अब चंदा उथे,
बादर भइगे फरियर।
पिरथी, माता चारोंखुँट ले,
दिखथे हरियर–हरियर।
रिगबिग ले अब अनपुरना हर
खेतन–खेत म छागे।।

नँदिया अउ तरिया के पानी,
कमती होये लागिस।
रद्दा के चउमास के चिखला
झंझटहा हर भागिस।
बने पेट भर पानी पी के
पिरथी आज अघा गे।।

लछमी ला लहुटारे खातिर,
जल देवता अगुवाइस।
तब जगजग ले पुरइन पाना–
के दसना दसवाइस।
रिगबिग ले फेर कमल फूल
हर,तरिया भर छतरागे।।

चारोंखुँट म चुहुल–पुहुल,
अब करथें चिरइ–चुरगुन।
भौंरा घलो परे हे बइहा,
करथे गुनगुन–गुनगुन।
अमरित बरसा होही संगी,
सुघर घड़ी अब आगे।।

छत्तीसगढ़ी शब्द मन के हिन्दी अर्थ

चउमास	=	वर्षा ऋतु के चार माह,बरसात	झंझटहा	=	परेशान करने वाला
			अघागे	=	तृप्त हो गया
परागे	=	दूर हो गया	लहुटारे खातिर	=	वापस लाने के लिए
चाँउर	=	चावल	पुरइन	=	कमल
सही	=	जैसे, समान	दसना	=	बिस्तर
छराना	=	चावल को मूसल से कूटकर साफ करना	छतरागे	=	फैल गया
			चुहुल–पुहुल	=	इधर –उधर उड़कर कलरव करना,चहल–पहल
जगजग ले उथे	=	प्रकाशवान उगता है			
भइगे	=	हो गया	चिरइ–चुरगुन	=	पक्षी
चारोंखुँट	=	चारों ओर	बइहा	=	पागल
रिगबिग ले	=	झिलमिलाता हुआ	सुघर	=	सुंदर
अनपुरना	=	अन्नपूर्णा,धरती	घड़ी	=	समय

अभ्यास

पाठ से

1. 'अकास हर चाँउर सही छरागे' के का भाव हे ?
2. नँदिया अउ तरिया के पानी काबर कमती होय लागिस ?
3. लछमी ल लहुटारे खातिर जल देवता ह का–का उदिम करिस ?
4. कवि ह अमृत बरसा काला कहे हवय, अउ ये बरसा कब होथे ?
5. सरद रितु मा हमर चारों खुँट का–का बदलाव होथे ?
6. चउमास हमर जिनगी के सुख समृद्धि के आधार काबर माने गेहे अउ चउमास म का–का होथे?
7. कवि सुघ्घर घड़ी कोन समय ल कहे हवय अउ वो समय का–का बदलाव होगे?

पाठ से आगे

5F2R2S

1. सरद रितु के आय ले चिरइ–चिरगुन अउ भौंरा मन अपन खुशी ल कइसे परगट करत हवय? अपन भाषा में लिखव।
2. 'बने पेट भर पानी पी के पिरथी आज अघा गे' ये वाक्य ल कवि काबर केहे हवय?
3. तुँहर सोच से कोन से रितु ह सबले सुघ्घर होथे, सुघ्घर काबर लगथे ? अपन कक्षा में विचार करके लिखव।
4. चउमास के महिना में तुँहर घर के आस–पास मा का–का बदलाव होथे। अउ तुमन ल ओकर से का–का परशानी अउ का आसानी लगथे। अपन कक्षा में विचार करके लिखव।

भाषा से

5FBM4F

1. ये शब्द मन के हिंदी खड़ी बोली के शब्द रूप लिखव–
   चाँउर, जगजग, पिरथी, चारों खुँट, रिगबिग, अनपुरना, तरिया, पुरइन, दसना, बइहा, चुहुल–पुहुल।
2. खाल्हे लिखाय शब्द मन के उल्टा अर्थ वाला शब्द लिखव–
   अकास, बरसा, फरियर, सुघर, बइहा, झंझटहा, कमती
3. ये शब्द मन ल अर्थ स्पष्ट करे बर अपन वाक्य में प्रयोग करव–
   गुनगुन–गुनगुन, हरियर–हरियर, घड़ी, अमरित, चिरइ–चुरगुन, तरिया, रिगबिग, चाँउर, अघागे।

योग्यता विस्तार

5FKI63

1. ये कविता के अधार ले सरद रितु के सुंदरता के एक ठन 10 वाक्य के निबन्ध लिखव।
2. सरद ऋतु के संबंध में हिंदी अउ छत्तीसगढ़ी भाषा में पाँच ठन कविता खोजव अउ अपन स्कूल के बालसभा म सुनावव।

●●●